मुख्य - पूजा अर्घ

(जिन पूजाओं को आप नहीं करना चाहते हो, उनके अर्घ बोलें।)

देव-शास्त्र गुरु का अर्घ

देव शास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर सिद्ध हृदय बिच धरले रे।
पूजन ध्यान गान गुण करके भव सागर जिय तरले रे।

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्य: श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्य:, श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो, अनर्घपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

तीस चौबीसी का अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ कर में नवीना हैं।
पुजतैं पाप छीना हैं, भानुमल जोर कीना है।
दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता विषै छाजै।
सात शत बीस जिन राजै, पूजतां पाप सब भाजै॥

ॐ ह्रीं पांच भरत पांच ऐरावत दश क्षेत्र के विषै तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिन बिम्बेभ्योऽर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ

भूत भविष्यत् वर्तमान की, तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम, तीन लोक मे मन लाऊँ॥

ॐ ह्रीं त्रिकाल सम्बन्धी तीस चौबीसी त्रिलोक सम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालयेभ्यो अर्घ नि.स्वाहा

चैत्य भक्ति आलोचना चाहूं कायोत्सर्ग अघनाशन हेतु।
कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक में राजत हैं जिन बिम्ब अनेक॥
चतुर निकाय के देव जजें ले अष्ट द्रव्य निज भक्ति समेत।
निज शक्ति अनुसार जजूं में कर समाधि पाऊँ शिव खेत॥

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

पूर्व मध्य अपरान्ह की वेला पूर्वाचार्यों के अनुसार।
देव वन्दना करूं भाव से सकल कर्म के नाशन हार॥
पंच महागुरु सुमिरन करके कायोत्सर्ग करूं सुख कार।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना, जाऊंगा अब मैं भव पार॥

(कायोत्सर्ग पूर्वक ९ बार णमोकार मन्त्र जपें)

पर्व पूजा का अर्घ

शोडष कारण भावना भाऊँ, दशलक्षण हिरदय धारूं।
सम्यक् रत्नत्रय गहि करके अष्ट कर्म बन को जारूँ ॥

ॐ ह्रीं षोडष कारण भावना दशलक्षण धर्म सम्यक् रत्नत्रयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी अर्घ

जल फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करों।
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों॥
चौबीसो श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सही।
पद-जजत हरत भवफन्द, पावत मोक्ष महीं॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतितीर्थंकरभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ जी का अर्घ

शुचि निरमल नीर गंध सु अक्षत, पुष्प चरू ले मन हरषाय ।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।।
श्री आदिनाथ जी के चरणकमल पर बलि बलि जाऊँ मन वच काय।
हे करूणानिधि भवदुख मेटो, यातैं मैं पूजूं प्रभु पाय॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ जी का अर्घ

जल चन्दन अक्षत पुष्प, नेवज आदि मिला।
मैं अष्ट द्रव्य से पूज, पाऊं सिद्ध शिला॥
बाड़ा के पद्म जिनेश, मंगल रूप सही।
काटो सब क्लेश महेश, मेरी अर्ज यही॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभुजी का अर्घ

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्री जिन मंन्दिर जावो।
अष्ट कर्म के नाश करन को श्री जिन चरण चढ़ावों॥
चंचल चित्त को रोकि, चतुर्गति चक्रभ्रमण निरवारो।
चारू चरण आचरण चतुर नर चन्द्रप्रभ चित्त धारो॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथ जी का अर्घ

वसु द्रव्य संवारी, तुम ढिग धारी, आनन्दकारी दृग प्यारी।
तुम हो भवतारी करूणाधारी, यातैं थारी शरनारी॥
श्री शांति जिनेशं, नुत नाकेशं, वृष चक्रेशं शक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ जी का अर्घ

नीर गंध अक्षतानु, पुष्प चरू लीजिये।
दीप धूप श्री फलादि, अर्घतें जजीजिये॥
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भव-दधितार, पूजत पाप हरों॥
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र का अर्घ

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु फल, दीप धुपायन धरौं।
'द्यानत' करो निरभय जगतसों, जोर कर विनती करौं।
सम्मेदगढ़ गिरनार चम्पा, पावापुरी कैलाशकों।
पूजौं सदा चौबीस जिन, निर्वाणभूमि निवासकों॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्य: तथा सिद्ध क्षेत्रातिशक्षेत्रेभ्यो अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।